सम्पूर्णता वर्ष

व्यर्थ संकल्प मुक्त सप्ताह

23.03.2014

1. **स्वमान** – मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ।

- स्वदर्शनचक्र व्यर्थ रुपी माया को नष्ट कर देता है। स्वदर्शनचक्र हमें यह स्मृति दिलाता है कि ड्रामा पूरा हुआ, अब घर जाना है। यह घर जाने की स्मृति हमें व्यर्थ समय गँवाने से मुक्त कर देती है।

2. **योगाभ्यास** –

अ. 'अब घर जाना है' - जैसे प्यारी मनमोहिनी दीदी ने घर जाने की धुन लगा दी थी... बारंबर वो यही याद दिलाया करती थीं कि अब घर जाना है...दादीजी ने भी धुन लगा दी थी कि अब कर्मातीत बनना है...स्वदर्शनचक्र फिराते हुए हम भी यही धुन लगा दें कि अब वापस घर चलना है और स्वयं को कर्मातीत बनाना है...ये स्मृतियाँ हमें व्यर्थ से मुक्त कर देंगी...।

ब. भगवानुवाच – 'यदि तुम बाप की याद में हर कदम उठाते हो तो तुम्हारे हम कदम में पद्म जमा होते हैं और यदि याद में कदम नहीं उठाते तो पद्मों का नुकसान हो जाता है।` तो हम अपने अमूल्य समय को व्यर्थ बातों में ना गँवाकर, अपना हर कदम बाबा की याद में ही उठायें।

स. भगवानुवाच – `जिस श्वाँस में बाबा की याद है, वही श्वाँस सफल है, बाकि निष्फल है।` तो हम श्वाँसों-श्वाँस बाबा को याद कर अपनी हर श्वाँस सफल करें।

3. **धारणा – नाउ ऑर नेवर**

- ब्रह्मा बाबा ने प्रारंभ से ही स्वयं के लिए और बच्चों के लिए यही स्लोगन रखा कि अब नहीं तो कभी नहीं। चाहे बात स्वउन्नति की रही हो या सेवा की, बाबा ने हमेशा इस मंत्र को अमल में लाया। इसीलिये वे नंबर वन बन गए। हम भी इस मंत्र को अपनी धारणा में ले आयें। स्वउन्नति और ईश्वरीय सेवा के लिए कहें **'अभी-अभी'** और यदि व्यर्थ आये तो उसे कहें **'फिर कभी'**।

4. **चिंतन** –

- कहाँ-कहाँ हम व्यर्थ में समय गँवाते हैं?
- क्यों गँवाते हैं हम व्यर्थ में अपना समय?
- कैसे करें अपने एक-एक पल को सफल?
- संगमयुगी समय के लिए बाबा के अनमोल महावाक्य?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों! कहा जाता है कि समय और तूफान किसी का इंतजार नहीं करते। जो वक्त बीत जाता है, वह इतिहास बन जाता है। संसार की सारी दौलत और ताकत लगाकर भी बीते हुए वक्त को वापस नहीं लाया जा सकता। रह जाती हैं तो केवल कुछ खुशनुमा यादें अथवा पश्चाताप्। हम संगम के अनमोल समय को बाबा की याद व सेवा में ही बितायें ताकि जीवन की अंतिम घड़ियों में जब हम पीछे मुड़कर देखें तो पश्चाताप् के लिए उसमें कोई स्थान न हो, हो तो केवल आनंद ही आनंद, संतोष ही संतोष...।